धूतपापेश्वर

।। आरोग्यचिंतन ।।

पत्रिका

।। शास्त्रतत्त्वप्रकाशार्थं एषा चिन्तनपत्रिका ।।

फरवरी २०२०

AROGYACHINTAN PATRIKA

संपादकीय

हम वर्ष २०२० में प्रवेश कर रहे हैं। हम आपको स्वास्थ्यपूर्ण नए वर्ष की शुभकामनाएँ देते हैं। आरोग्य चिंतन पत्रिका का यह हमारा छठा अंक है। पिछले वर्ष में हमनें विभिन्न आयुर्वेदिक विषयों तथा आधुनिक विज्ञानद्वारा उनके स्पष्टीकरण पर चिंतन किया है।

निम्नलिखित कुछ उल्लेखनीय विषय हैं जिन पर हमने चर्चा की:

अस्थिक्षय और मेद चयापचय (Fat metabolism):

यहाँ हमने आधुनिक वैज्ञानिक साहित्य के बारे में चर्चा की, जिसमें सुझाव दिया गया है कि, स्थौल्य अस्थि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अस्थिपोषण मेदसारता पर निर्भर रहता है।

आयुर्वेद ग्रंथो में निम्न धातु निर्मिती क्रम उल्लेखित है।

रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च ।
अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रं शुक्राद्गर्भः प्रसादजः।। – चरक

अस्थि स्वास्थ्य हेतु मेद–धात्वग्नि–वर्धन (मेद चयापचय) महत्त्व का है।

अस्थिश्रृंखला जैसे मेद धात्वग्निवर्धक औषधीयाँ इन्सुलिन सेंसिटाईझर का कार्य करती है।

एच. पाइलोरी और एसिड पेप्टिक डिसॉर्डर: एच. पाइलोरी और अम्लपित्त (एसिड पेप्टिक डिसॉर्डर) के बीच महत्त्वपूर्ण संबंध प्रस्थापित है। आयुर्वेद में वर्णित अम्लपित्त के आहार संबंधी हेतू एच. पाइलोरी संक्रमण के समृध्द स्रोतस् हैं, यह आश्चर्यजनक नहीं है। लेकिन यह आश्चर्यजनक है, की अम्लपित्त चिकित्सा हेतू वर्णित औषधीयाँ एच.पाइलोरी नाशक कार्य दर्शाती है। आधुनिक अध्ययन द्वारा स्थापित किया गया है की अम्लपित्त नाशक वनस्पतियों स्थित इलॅजिक ॲसिड, यह एच.पाइलोरी नाशक कार्य दर्शाता है।

गुग्गुल कल्पों की सर्वव्यापकता: गुग्गुल और गुग्गुल कल्प की बहुआयामी औषधीय प्रभाव, हमें यह विश्वास दिलाती है कि –

गुग्गुलुः जयेत्सर्वाणि विकाराणि।

सहस्र वर्षों पहले आयुर्वेद आचार्यों द्वारा वर्णित गुग्गुल और गुग्गुलकल्प के आज हम आधुनिक अध्ययन द्वारा विभिन्न आण्विक लक्ष्य तथा शोथ (NF-kB) विरोधी कार्य समझते हैं।

'फ्रंटियर्स इन इम्यूनोलॉजी (९ एप्रैल २०१९)' पत्रिका में सद्यः प्रकाशित अध्ययन 'NF-kB सिग्नलिंग इन मैक्रोफेजः डायनेमिक्स, क्रॉसस्टॉक और सिग्नल इंटीग्रेशन', निम्नोक्त वाक्य के साथ समाप्त होता है– 'यह NF-kB सिग्नलिंग अनुसंधान का भविष्य उज्वल है और दैदिप्यमान है।' वैसे ही जीर्ण धातुक्षयजन्य संधि, त्वचा और मेद चयापचय संबंधी विकारों की चिकित्सा में गुग्गुल कल्प की प्रासंगिकता उज्वल है।

पाण्डुरोग और अवसाद (Depression): अवसाद और पाण्डुरोग के बीच का साहचर्य संबंध आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में बहुत अच्छी तरह से ज्ञात नहीं है परंतु आयुर्वेद द्वारा पाण्डुरोग और अवसाद के बीच गंभीर संबंध के बारे में ज्ञान था। पाण्डुरोग संप्राप्ती का विस्तृत वर्णन यह बताता है कि पाण्डुरोग में ओजक्षय होता है। ओजक्षय के लक्षण चिंता और अवसाद लक्षणों के समान हैं।

बिभेति दुर्बलोऽभीक्ष्णं ध्यायति व्यथितेन्द्रियः।
दुश्छायो दुर्मना रूक्षः क्षामश्चैवौजसः क्षये।। – चरक

ट्रांसलेशनल मेडिसिन (TM): हमने यह भी चर्चा की है कि,आयुर्वेदिक रोग संप्राप्ति को समझने हेतु ट्रांसलेशनल मेडिसिन के सिद्धांतो का उपयोग कैसे किया जाए, जैसे आधुनिक विज्ञान द्वारा वर्णित Pre-menstrual syndrome (PMS) और आयुर्वेदोक्त उदावर्ता योनिव्यापद्।

अब यह समय आ गया है की, हम आयुर्वेद ज्ञान का अनुवाद आधुनिक वैज्ञानिक संकल्पनोंओं में करें। उदावर्ता योनिव्यापद् को Pre-menstrual syndrome के रूप में समझना TM के उदाहरणों में से एक है। इस तरह हम आधुनिक विकारों के लिए आयुर्वेद उपचार प्रदान कर पाएंगे। आयुर्वेद को समझने के लिए TM सिद्धांतो का उपयोग करने से हमें चिकित्सा करते समय पर्याप्त मदद मिलेगी।

बालकों का स्वास्थ्य और वयस्कों का स्वास्थ्य: वयस्क स्वास्थ्य बाल्यावस्था के स्वास्थ्य की गुणवत्ता पर निर्भर करता है और इसलिए बाल्यावस्था के समय बालक के वृद्धि और विकास का ध्यान रखना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। क्योंकि आयु संबंधी विकार (Lifestyle disorder) न केवल आनुवंशिक प्रवृत्ति से जुडी होती हैं, बल्कि विकास के दौरान पर्यावरणीय परिवर्तनों के लिए अनुकूल परिवर्तनों से भी संबंधित होती है। इस विचार को Developmental Origins of Health and Disease (DOHaD) hypothesis. (Early Life Origins of Ageing and Longevity, HAL, Volume 9) संकल्पना केरूप में माना जाता है। (Early Life Origins of Ageing and Longevity, HAL, Volume 9).

हेपसिडिन और पाण्डुरोग: आयुर्वेद अनुसार यकृत् – रक्तवह स्रोतस् का मूल अवयव है।

शोणितवहानां स्रोतसां यकृन्मूलं प्लीहा च। – चरक

यकृत् हेपसिडीन नामक एक पेप्टाइड हार्मोन को उत्पन्न करता है, जो लोह की समस्थिती बनाएं रखने के लिए उत्तरदायी है। पाण्डुरोग (Iron deficiency anaemia IDA) के रोगियों के रस–रक्त स्थित हेपसिडिन की अधिक मात्रा देखी गई है। पाण्डुरोग चिकित्सा में सामान्यतः उपयुक्त वनस्पति औषधीयाँ रस–रक्त स्थित हेपसिडीन की मात्रा कम करनें में मदद करते है।

हमने इन विचारों का आरोग्य चिंतन पत्रिका में चिंतन किया हैं। हम अपने भविष्य के आरोग्य चिंतन पत्रिका में भी इसी तरह चिंतन जारी रखेंगे।

आचार्य चरक निम्न श्लोक के साथ अपनी संहिता को समाप्त करते हैं:

दुर्गृहीतं क्षिणोत्येव शास्त्रं शस्त्रमिवाबुधम्।
सुगृहीतं तदेव ज्ञं शास्त्रं शस्त्रं च रक्षति।। – चरक

आरोग्य चिंतन पत्रिका के द्वारा किया गया चिंतन आयुर्वेद के विभिन्न सिद्धांतो पर प्रकाश डालेगा और आयुर्वेद को सुगृहीत बनाएगा।

वैद्य.मिलिंद पाटील
वैद्यकीय सलाहकार
विक्रम डिविजन,श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

दीर्घमायुर्यशः स्वास्थ्यं त्रिवर्गं चापि पुष्कलम्।
सिद्धिं चानुत्तमां लोके प्राप्नोति विधिना पठन्।। – चरक

अर्श: एक भेषजसाध्य व्याधि!

चरक संहिता चिकित्सा स्थान अध्याय १४ में, आचार्य चरक ने अर्श के हेतु, संप्राप्ति, एवं लक्षणों का वर्णन किया है तथा अर्श चिकित्सा हेतु विभिन्न उपचारों का उपदेश किया है। अर्श का संपूर्ण विवरण और उसके उपचार, अर्श को भेषजसाध्य व्याधि होने की ओर इशारा करते है।

अर्शांसि चातिसारश्च ग्रहणीदोष एव च।।
एषामग्निबले हीने वृद्धिर्वृद्धे परिक्षय:।
तस्मादग्निबलं रक्ष्यमेषु त्रिषु विशेषत:।। – चरक

अर्श, अतिसार एवं ग्रहणी विकार अग्निमांद्य के कारण होते है और अग्नि प्राकृत होने पर यह विकार शांत हो जाते है। इसलिए इन तीनों विकारों के चिकित्सा में चिकित्सक को दुर्बल अग्नि की चिकित्सा करनी चाहिए।

आचार्य चरक ने अपने चिकित्सा प्रधान ग्रंथ चरक संहिता में अर्श का वर्णन किया है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि, अर्श एक भेषज अथवा औषधी साध्य व्याधि है। चरक संहिता कायचिकित्सा प्रधान ग्रंथ है। यह सर्वविदित है कि कायचिकित्सा में 'काय' शब्द अग्नि को निर्देशित करता है। अर्श पर उपलब्ध आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों ने भी अर्श को एक भेषजसाध्य व्याधि के रूप में मानना शुरू किया है।

अनेक शल्य तंत्र विशेषज्ञों ने शल्यचिकित्सा प्रमाणों पर आधारित अर्श रोग संप्राप्ति में विभिन्न निष्कर्षो को स्थापित किया है, परंतु आधुनिक अर्श संप्राप्ति असष्ट है।

नवीनतम अध्ययनों से यह ज्ञात हो रहा है कि –

- Perivascular inflammation
- Dysregulation of the vascular tone
- Vascular hyperplasia

अर्श संप्राप्ति में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अर्श के ऊतकों में प्राकृत सूक्ष्म रसरक्तसंवहन, अर्श चिकित्सा हेतू एक संभाव्य और महत्त्वपूर्ण लक्ष्य हो सकता है।

पञ्चात्मा मारुत: पित्तं कफो गुदवलित्रयम्।
सर्व एव प्रकुप्यन्ति गुदजानां समुद्भवे।।
तस्मादर्शांसि दु:खानि बहुव्याधिकराणि च।
सर्वदेहोपतापीनि प्राय: कृच्छ्रतमानि च।। – चरक

आयुर्वेद के अनुसार अर्श के ऊतकों में प्राकृत सूक्ष्म रसरक्तसंवहन अपानवायु का कार्य है।

अन्नवह स्रोतस् एवं आंत्र की गतिशीलता प्राण–समान–अपानवायु द्वारा नियंत्रित होती है और इस गतिशीलता में बाधा के कारण निश्चित रूप से अपानवायु पर विपरीत प्रभाव पडता है, जिससे अर्श कि उत्पत्ती होती है। इसलिए आचार्य चरक ने निम्नोक्त चिकित्सा का निर्देश किया है।

यद्वायोरानुलोम्याय यदग्निबलवृद्धये।
अन्नपानौषधद्रव्यं तत् सेव्यं नित्यमर्शसै:।। – चरक

अर्श रुग्ण को सदैव वातानुलोमक तथा अग्निवर्धक अन्न और औषधी का सेवन करना चाहिए।

अर्श कि भेषज चिकित्सा:

चरक संहिता जैसे चिकित्साप्रधान आयुर्वेद ग्रंथ अर्श के चिकित्सा हेतु भेषज चिकित्सा का निर्देश करते है। औषधीय वनस्पतियों में फ्लेवोनोइड कि प्रचुरता होती हैं, जो अर्श में रक्तस्राव, कण्डु और निरंतर पीडा को नियंत्रित करने में उपयुक्त होते हैं, तथा अर्श के पुनर्भव को लगातार कम करने में मदद करते हैं।

अर्श चिकित्सा में फ्लेवोनोइड सर्व सामान्य Phlebotonic (रक्तवाहिनी सिरासंरक्षक) है। यह स्पष्ट है कि, फ्लेवोनोइड रक्तवाहिनी सिराओं को बल प्रदान कर, केशिका पारगम्यता को कम कर, लसीका निकास की सुविधा प्रदान कर शोथनाशक क्षमता दर्शाते है।

फ्लेवोनोइड की कार्मुकता:

- Increases the impaired vascular tone
- Relieves congestion inside sinusoids (they reduce venous capacity and decrease capillary permeability)
- Facilitates lymphatic drainage
- Exerts anti-inflammatory effects

अर्श के नैदानिक परीक्षण, जीर्ण तथा तीव्र अवस्था में फ्लेवोनोइड चिकित्सा की प्रभावशीलता दर्शाते हैं। अर्श की जीर्ण अवस्था में दारुण शल्य चिकित्सा के बजाय फ्लेवोनोइड द्वारा भेषज चिकित्सा से अनेक रुग्णों में अर्श के लक्षणों तथा पुनर्भव से उपशय मिला। अर्श कि तीव्र अवस्था में फ्लेवोनोइड चिकित्सा से अर्श ऊतकों में स्रोतोरोध (congestion) तथा रक्तस्कंदन (thrombosis) कम होता है।

स्थानिक गुदशोथ से गुदशूल एवं रक्तस्राव बढता हैं। इस के निवारण हेतू शोथहर स्थानिक चिकित्सा से लाक्षणिक उपशय प्राप्त होता है। अर्श की भेषजचिकित्सा का एक अन्य प्रमुख लक्ष्य पुरीष का परिपिण्डित करना है क्योंकि अतिसार और मलावरोध अर्श रोग में लक्षणों की वृद्धि के कारक हैं इसलिए उनकी चिकित्सा अर्श चिकित्सा के लिए महत्त्वपूर्ण है। 'African journal of pharmacy and pharmacology 8(17):455-463 May 2014' में प्रकाशित अध्ययन 'Pharmacological effect of some fractions obtained from Sapindus trifoliatus acting as an antioxidant and against mammary cell proliferation' अरिष्टक (Sapindus trifoliatus) को फ्लेवोनोइड समृद्ध वनस्पती द्रव्य के रूप में दर्शाता है।

अर्शहिता सुखोपाया अल्पभ्रंशा त्वदारूणा।
सलेपेन च भवति समूलार्शनिवृत्तये।।

घटक द्रव्य –

प्रति गोली में –

घटक द्रव्य	मात्रा	कार्य
शोधित सर्ज	२०० मि.ग्रा.	व्रणनाशन:। (Wound healing)
अरिष्क	१०० मि.ग्रा.	कण्डुविस्फोटनाशन:। (Prevents itching)
सूरण	५० मि.ग्रा.	सूरणो गुदकीलहा। (Arshanashak)

प्रति १० ग्राम ऑईंटमेंट में

घटक द्रव्य	मात्रा	कार्य
तिल तैल	६.४२० ग्राम	व्रणालेपन एव पथ्य:। (Wound healing)
शोधित सर्ज रस	१.६०० ग्राम	व्रणनाशन:। (Wound healing)
भीमसेनी कर्पूर	०.३०० ग्राम	कण्डूहर। (Prevents itching)
मधुच्छिष्ट	यथावश्यक	व्रणरोपणम्। (Wound healing)
तिल तैल	६.४२० ग्राम	

अर्श हिता टॅबलेट्स
मात्रा एवं अनुपान
२ से ३ गोलियाँ दिन में २ से ३ बार, त्रिफला चूर्ण, अभयारिष्ट या कोष्ण जल के साथ

अर्श हिता ऑईंटमेंट
उपयोग के लिए निर्देश
मलत्याग के पूर्व एवं पश्चात् प्रयोग करे।

उपलब्धता : ६० गोली
उपलब्धता : ३० ग्राम

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0702564
Arsha Hita Tablets

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070257
Arsha Hita Ointment

शिशु भरण (शिशु वृद्धि एवं विकास) वयस्क स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

प्रौढावस्था और वार्धक्यावस्था का स्वास्थ्य बाल्यावस्था के सुचारू वृद्धि और विकास के साथ जुडा है। वस्तुतः अच्छे स्वास्थ्य की शुरुवात गर्भावस्था में ही माता के उदर में होती है। नवजात बालक का स्वास्थ्य जैसे गर्भावस्था में होनेवाले स्वास्थ्य पर निर्भर होता है, उसी तरह प्रौढ और वृद्ध इनका स्वास्थ्य बाल्यावस्था के स्वास्थ्य पर निर्भर रहता है।

आधुनिक अनुसंधानों से यह ज्ञात होता है की, हृद्रोग, मधुमेह, स्थौल्य, संधिगतवात, कॅन्सर, स्मृतिनाश और कंपवात इत्यादि विकार संसारभर में वैकल्य और मृत्यु का कारण हो रहे है। इन जीर्ण विकारों के कारण बाल्यावस्था में होनेवाले मिथ्याहार–विहार से संबंधित होते है। यदि बाल्यावस्था में अस्वास्थ्य रहता है तो उसका बुरा परिणाम वयस्क अवस्था में दिखाई देता है।

एक अध्ययन के अनुसार वयस्को में स्थौल्य और हृदय की रचना का संबंध बाल्यावस्था में होनेवाले स्थौल्य से संबंधित रहता है। 'Impact of adiposity on cardiac structure in adult life: The Childhood Determinants of Adult Health (CDAH) study' (BMC Cardiovasc Disord. 2014 Jul) इस अध्ययन का निष्कर्ष है की, बाल्यावस्था में होनेवाला स्थौल्य वयस्को के हृदय रचना को विकृत करता है।

एक अन्य अध्ययन के अनुसार स्थूल बालक जब वयस्क होता है तब मधुमेह, उच्चरक्तचाप, मेदोविकृती और धमनीप्रतिचय का कारण होता है। (N Engl J Med. 2011 Nov).

Schmidt MD et al. Int J Obes (Lond). 2016 Jul, के अनुसार बाल्यावस्था में होनेवाले प्राणवहस्रोतस् और रक्तवहस्रोतस् का स्वास्थ्य आगे के जीवन में शुभ परिणाम दिखाता है। वार्धक्यावस्था में होनेवाले विकारों का निदानपरिवर्जन वस्तुतः बाल्यावस्था में करना आवश्यक होता है। इसलिए बालक का भरण पोषण यदि सुचारु रूपसे किया गया हो तो भविष्यकालिन विकारों की उत्पत्ति रोकी जा सकती है।

Obesity Silver Spring. 2014 Dec के अनुसार शिशु अवस्था में यदि स्थौल्य का अभाव हो तो परिणामस्वरुप रसरक्त वाहिनीयों का स्वास्थ्य बना रहता है।

(Indian Journal of Public Health Research & Development, Mar 2019) के अनुसार बालक के स्वास्थ्य को बढावा देने के प्रयत्नों का दीर्घकालिन लाभ होता है। इसलिए स्वास्थ्य–सेवा प्रदाताओं और माता पिता को विशिष्ट आयुसमूहों के जीवन चक्र पर दीर्घकालिन प्रभावों पर विचार करना चाहिए।

'सेंटर ऑन डेवलपिंग चाइल्ड, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी' द्वारा प्रकाशित 'इन ब्रीफ द फाउंडेशन ऑफ लाइफलॉन्ग हेल्थ', लेख के अनुसार बाल्यावस्थाकालिन शुरूआती अनुभव हमारे शरीर में संकलित होते है, जिसकी जैविक स्मृतियां बनती हैं और शरीर विकास को आकार देती हैं, एवं उन्हें बेहतर या बदतर बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। प्रतिकूलता के कारण उत्पन्न विषाक्त तनाव शरीर की तनाव प्रतिक्रिया प्रणालियों के विकास को कमजोर कर सकता है और विकासशील मस्तिष्क, हृदय प्रणाली, प्रतिरक्षा प्रणाली और चयापचय विनियात्मक नियंत्रणों की रचना को प्रभावित कर सकता है। ये शारीरिक व्यवधान वयस्कता में दूर तक रह सकते हैं और शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों में आजीवन हानि पैदा कर सकते हैं।

सकारात्मक शुरूआती अनुभव बालकों को मजबूत मस्तिष्क संरचना के निर्माण के लिए एक नींव प्रदान करते हैं, जो जीवन भर कौशल और सीखने की क्षमता की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करता है।

Rose M Alvarez-Salvat (Ph.D. Paediatric Psychology- clinical supervisor of the psychology division at Nicklaus Children's Hospital in Miami) ने कहा है की, बाल्यावस्था में रहनेवाले सकारात्मक वातावरण और अच्छे भरण पोषण से समृध्द जीवनशैली के अच्छे परिणाम प्रौढ वार्धक्यावस्था में शरीर और मानस स्वास्थ्य को बनाए रखता है।

चरक संहिता शारीरस्थान ८ वें अध्याय में खिलौनों की प्रकृति के बारे में मार्गदर्शन दिया गया है:

न ह्यस्य वित्रासनं साधु।
तस्मात्तस्मिन् रुदत्यभुञ्जाने वाऽन्यत्र विधेयतामगच्छति
राक्षसपिशाचपूतनाद्यानां नामान्याह्वयता
कुमारस्य वित्रासनार्थं नामग्रहणं न कार्यं स्यात्।। –चरक

यहा विशेष रूप से उल्लेख किया गया है कि, बालक को डराना या आतंकित नहीं करना चाहिए। बच्चे को डराना कभी अच्छा नहीं होता। इसलिए यदि वह रो रहा है, अपना भोजन खाने से इन्कार कर रहा है, या किसी भी तरह से अवज्ञाकारी बन गया है, तो बच्चे का डराने के उद्देश्य से राक्षस, पिशाच या पूतना का नाम लेना ठीक नहीं है।

उपरोक्त सभी जानकारी शिशु भरण (शिशु की वृद्धि एवं विकास) के महत्त्व पर प्रकाश डालती है। स्वस्थ और सुखद वयस्कता के लिए बचपन में ही मजबूत नींव का निर्माण करना चाहिए।

शिशु भरण रस एक सुरक्षित और प्रभावी योग है, जिसमें कुमारकल्याण रस (सुवर्णयुक्त प्रिमियम क्वालिटी), सितोपलादि चूर्ण, संशमनी वटी, मधुमालिनी वसंत रस और द्राक्षा क्वाथ घटकद्रव्य हैं, जो बच्चे के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं और बढती आयु संबंधित रोगों को रोकते हैं।

वर्णायुः कान्तिदं श्रेष्ठं पुष्टिकृद्बलवर्धनम्।
बालानां वह्निकृच्चैव दन्तोद्भेदगदापहम्।।

शिशु भरण रस त्वचा को कांति प्रदान करता है, वर्ण में सुधार करने में मदद करता है। यह एक रसायन है और बच्चे के उचित विकास में मदद करता है। शिशु भरण रस बच्चों में क्षुधावर्धक और पाचक के रूप में काम करता है।

शिशु भरण रस में स्थित कुमारकल्याण रस, यह एक प्रसिद्ध रसायन है। यह बालक वृद्धि और विकास में लाभप्रद है, जैसे की निम्न श्लोक में वर्णित है।

कामलामतिसारञ्च कृशतां वह्निवैकृतम्।
रसः कुमारकल्याणो नाशयेन्नात्र संशयः।।
अनुपानविशेषेण बलपुष्टिप्रदायकः।
रोगनाशात्परं दद्याद् बलमांसाग्निवर्धनः।। – भा.भै.र.

क्र	शिशु भरण रस
१	**कुमारकल्याण रस (सुवर्णयुक्त) प्रमिअम क्वालिटी** कृशतां वह्निवैकृतम्। रसः कुमारकल्याणो नाशयेन्नात्र संशयः।।
२	**सितोपलादि चूर्ण** श्वासकासक्षयहरं ....मन्दाग्निं ज्वरं व्यपोहति।
३	**संशमनी वटी** गुडूची कटुका तिक्ता रसायनी लघ्वी बल्याऽग्निदीपनी दोषत्रयज्वरक्रिमिवमीन्हरेत् श्वासकासनुत् ।
४	**मधुमालिनी वसंत** मधुमालिनीनामायं वसन्तो वैद्यपूजितः। अनुपानविशेषेण बलपुष्टिप्रदायकः।।
५	**द्राक्षा क्वाथ** द्राक्षा पक्वा सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः।

चयापचय संबंधी विकारों में मायरोलॅक्स फोर्ट की कार्मुकता ।

चयापचय संबंधी विकारः विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार यह अनुमान किया गया है कि वर्ष २०२० तक भारत में चयापचय संबंधी विकार विकलांगता और मृत्यु का सबसे बडा कारण होंगे और २६ लक्ष लोगों में हृद्रोग के कारण मृत्यु होने का अनुमान किया गया है।

दुष्ट चयापचय के कारण हृद्रोग और प्रमेह की संभावना दो गुना और पाँच गुना क्रमशः बढ जाती है।

दीर्घ समय तक विकृत चयापचय से ३०–४० प्रतिशत व्यक्तियों में हृद्रोग और प्रमेह होने की संभावना बढ जाती है।

चयापचय संबंधी विकारों में पंचकर्म चिकित्साः

'आयुर्वेद' यह 'आयुः संबंधी विज्ञान' के रूप में जाना जाता है। आयुर्वेद अपने द्विविध प्रयोजन –

स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्य विकारप्रशमनम्।।

– के लिए जाना जाता है। यह विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा प्रणालीयों मे से एक है। आयुर्वेद शास्त्र विभिन्न रोगों की चिकित्सा एवं स्वस्थ्य व्यक्तिओं में आयुवृद्धि में सहायता प्रदान करने में श्रेष्ठ हैं।

आयुर्वेद विभिन्न रोगों के चिकित्सा हेतु द्विविध उपचार पध्दती का उपदेश करता हैः शमन, शोधन।

दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति जिता लङ्घनपाचनैः।
जिताः संशोधनैर्ये तु न तेषां पुनरुद्भवः।।
तस्मात् संशोधनं काले युक्तियुक्तं पिबेन्नरः।

– चरक

आचार्य चरक के अनुसार, व्याधी चिकित्सा में शमन उपचार के पश्चात् व्याधी का पुनरुद्भव संभव है परंतु शोधन चिकित्सा व्याधिओं की अपुनर्भव चिकित्सा होती है।

मलापहं रोगहरं बलवर्णप्रसादनम्।
पीत्वा संशोधनं सम्यगायुषा युज्यते चिरम्।।

– चरक

पंचकर्म उपचार शोधन चिकित्सा है। यह आयुर्वेद शास्त्र में वर्णित विशिष्ट शरीर शुध्दीकरण चिकित्सा है, जो दोष–धातु–मल जैसे शारीरिक तत्त्वों की साम्यावस्था बनाए रखने में और चयापचय संबंधी विकारों में आम को कम करने में मदद करती है। पंचकर्म शरीरस्थ जैविक प्रणाली को प्राकृत बनाए रखते हुए रसायन कार्य द्वारा सेवन की शमन औषधीयों का प्रभाव विवर्धित करती है।

पित्ते विरेचनं युञ्ज्यादामोद्भूते गदे तथा।
उदरे च तथाध्माने कोष्ठशुध्द्यै विशेषतः।।

– शा.सं

- विरेचन कर्म विभिन्न प्रकार के पित्तप्रधान व्याधियों के चिकित्सा हेतु प्रधानकर्म है।
- विरेचन से दूषित पित्त शरीर से निष्कासित हो जाता है।

विरेचन कर्म से पित्तज विकारों में लाक्षणिक उपशय होता हैं। विरेचन कर्म यह पित्तज विकारों में रसायन एवं अपुनर्भव चिकित्सा है। विरेचन कर्म से विभिन्न प्रकार की शारीरिक, जैव–रासायनिक तंत्र और व्याधिक्षमत्व को प्राकृत बनाए रखने में सहायता होती है।

स्रोतोविशुद्धीन्द्रियसंप्रसादौ।
लघुत्वमूर्जोऽग्निरनामयत्वम्।।
प्राप्तिश्च विट्पित्तकफानिलानां।
सम्यग्विरिक्तस्य भवेत् क्रमेण।।

– चरक

विरेचन कर्म शरीर में लघुता, स्रोतों की शुद्धी, इंद्रिय प्रसन्नता, उर्जा में वृद्धि, शरीर पचनक्रिया में सुधार, क्षुधावृद्धि और बलवृद्धि कर, विभिन्न दुष्ट दोषों के लक्षणों से उपशय प्रदान करता है। सम्यक् विरेचन से शरीरान्तर्गत मल, पित्त, कफ एवं वातदोष क्रमशः शरीर से बाहर निष्कासित होने में सहायता होती हैं।

अविपाकोऽरुचिः स्थौल्यं पाण्डुता गौरवं क्लमः।
पिडकाकोठकण्डूनां संभवोऽरतिरेव च।।
आलस्यश्रमदौर्बल्यं दौर्गन्ध्यमवसादकः।
श्लेष्मपित्तसमुत्क्लेशो निद्रानाशोऽतिनिद्रता।।
तन्द्रा क्लैब्यमबुद्धित्वमशस्तस्वप्नदर्शनम्।
बलवर्णप्रणाशश्च तृप्यतो बृंहणैरपि।।
बहुदोषस्य लिङ्गानि तस्मै संशोधनं हितम्।
ऊर्ध्वं चैवानुलोमं च यथादोषं यथाबलम्।।
एवं विशुद्धकोष्ठस्य कायाग्निरभिवर्धते।
व्याधयश्चोपशाम्यन्ति प्रकृतिश्चानुवर्तते।।
इन्द्रियाणि मनोबुद्धिर्वर्णश्चास्य प्रसीदति।
बलं पुष्टिरपत्यं च वृषता चास्य जायते।।
जरां कृच्छ्रेण लभते चिरं जीवत्यनामयः।
तस्मात् संशोधनं काले युक्तियुक्तं पिबेन्नरः।।

– चरक

उपरोक्त व्याधियों में विरेचन कर्म की यह लाभ दिखाई देते हैं।

मायरोलॅक्स® फोर्ट

टेबलेट्स

मलबद्धता में उपयुक्त
(शोधित जयपालयुक्त)

पित्ते विरेचनं युञ्ज्यादामोद्भुते गदे तथा।
उदरे च तथाध्माने क्रूरकोष्ठे विशेषतः।

घटक द्रव्य

प्रति गोली में

घटक द्रव्य	मात्रा	कार्य
शोधित हिंगुल	३५ मि.ग्रा.	पित्तजामयनिषूदनः परम्। (पित्तजरोगनाशक)
शोधित जयपाल	३५ मि.ग्रा.	रेची पित्तकफापहा। (विरेचक)
शोधित विषमुष्टी	२० मि.ग्रा.	आध्मानं नाशयत्याशु। (आध्माननाशक)
हरीतकी	१५० मि.ग्रा.	आध्मानविस्रंसिनी। (आध्माननाशक, सौम्य विरेचक)
पारसिक यवानी	२४० मि.ग्रा.	वह्निदीपनी। (अग्निमांद्यहर)

उपयुक्तता

- जीर्ण मलावष्टंभ
- क्रुर कोष्ठी व्यक्तियों में सकष्ट मलप्रवृत्ती
- विरेचनार्ह विकार :
  - कुष्ठ
  - पक्षाघात
  - श्वास
  - कामला
  - उदर
  - शोथ

मायरोलॅक्स फोर्ट प्रभावशाली विरेचक

कफगुल्मं विरेचनैः।
कामली तु विरेचनैः।
तमके तु विरेचनम्।
पक्षाघाते विरेचनम्।
उदरं नित्यं विरेचयेत्।
कुष्ठ – विरेचनं चाग्रे।
शोथ – अधोविरेचनैः।

योग्य

क्रुर कोष्ठ और विरेचन में

निषिध्द

गर्भिणी और बालकों में

मात्रा एवं अनुपान

१ गोली प्रातःकाल या रात को या वैद्यकीय सलाहनुसार

उपलब्धता : १० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0702554
Myrolax Forte

बालकों में प्राणवहस्रोतस् क्रेंद्रित कास चिकित्सा।

कास एक प्रचलित बालरोग है, जिसके लिए संसारभर के माता–पिता सदैव चिंतित रहते है। सामान्यतः बालकों में वायरस द्वारा श्वसन मार्ग के संक्रमण (acute viral upper respiratory tract infections URTI) से तीव्र कास उत्पन्न होता है। तीव्र कास दीर्घ समय तक बने रहने पर जीर्ण कास में परिवर्तित होता है और बैक्टैरिया से संक्रमित कास को उत्पन्न करता है। इस अवस्था के चिकित्सा हेतु सौम्य औषधी उपचार की आवश्यकता होती है, परंतु संतोषजनक चिकित्सा विकल्प दुर्लभ है। उपलब्ध कासनाशक चिकित्सा लाक्षणिक, मादक और निद्राजनक है, जो स्वस्थ के लिए हानिकारक और अस्वीकार्य है। इसके अलावा, बालकों और वयस्कों में कास चिकित्सा बहुत भिन्न होती है और सामान्यतः वयस्कों में उपयुक्त कासनाशक औषधी बालकों के लिए अनुपयुक्त होती है। इसलिए एक सुरक्षित, प्रभावी, अनिद्राजनक कासनाशक औषधी की अत्यंत जरुरी है।

बालकों में व्याधिक्षमत्व अपरिपक्व होता है। इसलिए वे पुनः पुनः वायरस द्वारा श्वसन मार्ग संक्रमण के लिए अतिसंवेदनशील होते है, क्योंकि उनका प्राणवहस्रोतस् सदैव पर्यावरण के बाह्य रोगकारक घटकों के सीधे संपर्क में होता है। कास की स्थिर, सुनिश्चित और सर्वोत्तम चिकित्सा तथा प्राणवहस्रोतस् स्थानवैगुण्य के संरक्षण हेतु बालकों के व्याधिक्षमत्व का संरक्षण तथा वृद्धि करना आवश्यक है।

बालचातुर्भद्रिका सिरप चार औषधीयों का योग हैः पिप्पली, कर्कटश्रृंगी, मुस्ता और अतिविषा, जो पारंपारिक रूपसे रसायन तथा व्याधिक्षमत्व वृद्धि हेतु प्रयोग किया जाता है। पिप्पली और कर्कटश्रृंगी प्राणवहस्रोतस् को बल देने का कार्य करते हैं। मुस्ता और अतिविषा अन्नवहस्रोतस् को बल देने का कार्य करते है।

प्राणवहस्रोतस् विकारों की चिकित्सा में पिप्पली को प्राचीनकाल से प्रशस्त माना गया है। पिप्पली को विशेष रूपसे प्राणवह स्रोतस् रसायन के रूप में वर्णित किया गया है।

श्वासकासज्वरहरा वृष्यामेध्याऽग्निवर्धिनी।
जीर्णज्वरोऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली।
कासाजीर्णारूचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत्।। – भा.प्र.

बालरोग चिकित्सा हेतु कर्कटश्रृंगी एक आदर्श औषधी है। निम्नोक्त सूत्र कास, पीनस, ज्वर, श्वास आदि जैसे प्राणवह स्रोतस् संक्रमण में उपयुक्त तथा प्राणवह स्रोतस् पर कर्कटश्रृंगी का संरक्षणात्मक प्रभाव दर्शाता है।

सद्यःअध्ययन प्राणवह स्रोतस् के स्वास्थ्य तथा रोगप्रतिकार हेतु कर्कटश्रृंगी का प्रभाव दर्शाते है।

श्रृङ्गी कषाया तिक्तोष्णा कफवातक्षयज्वरान्।
श्वासोर्ध्ववाततृट्कासहिक्कारुचिर्वमीन्हरेत्।। – भा.प्र.

दीपन, पाचन और संग्रहण यह तीन कार्य अन्नपाचन की प्रक्रिया को पूरा करते है। बालकों में संक्रमण के समय दुष्ट अग्नि के कारण अन्नवह स्रोतस् के आंतरिक श्लैष्मिक स्तर की अखंडता में हानि होती है।

मुस्ता इस क्षति को कम कर स्वास्थ्य पुनःस्थापित करने में मदत करती है, अन्नवह स्रोतस् की अंतःस्त्वचा की रक्षाकर अन्नपचन प्रक्रिया को प्राकृत बनाए रखती है।

मुस्तं कटु हिमं ग्राहि तिक्तंदीपनपाचनम्।
कषायं कफपित्तास्रतृड्ज्वरारुचिजन्तुहृत्। – भा.प्र.
मुस्तं साङ्ग्राहिकदीपनीयपाचनीयानाम्।। (अग्र्यः)

अतिविषा दीपन, पाचन, संग्राही और कृमिघ्न होने के कारण अन्नवहस्रोतस् के रोगप्रतिकार तथा रसायन कार्य में उपयुक्त होती हैं।

विषा सोष्णा कटुस्तिक्ता पाचनी दीपनी हरेत्।
कफपित्तातिसारामविषकासवमिक्रिमीन्। – भा.प्र.
अतिविषा दीपनीयपाचनीयसाङ्ग्राहिकसर्वदोषहराणाम्।। (अग्र्यः)

ऐसे प्रभावी औषधीयों से युक्त सुरक्षित, अनिद्राकर और व्याधिक्षमत्ववर्धक बालचातुर्भद्रिका सिरप प्रतिश्याय और कास से बालकों के स्वास्थ का रक्षण करता है और एंटीबायोटिक का अनावश्यक उपयोग को रोकता हैं।

बालचातुर्भद्रं चूर्णं शर्करामधुसंयुतम्।
शिशोर्ज्वरातिसारघ्नं कासश्वासवमीहरम्।।

बालचातुर्भद्रिका सिरप के साथ मिनकॉफ कफ सिरप अपने कासनाशक गुणों के साथ–साथ वायरल तथा बॅक्टेरियल संक्रमण के बोझ को कम करने में मदत करता है। मिनकॉफ कफ सिरप के घटकद्रव्यों के कारण यह सिरप एक सामान्य कफ सिरप से श्रेष्ठ है। तुलसी, हरिद्रा और पिप्पली रसायन और जीवाणू विरोधी कार्य दर्शाते है। यष्टिमधु, शुंठी और हरिद्रा प्राणवहस्रोतस् संक्रमण में शोथनाशक कार्य करते हुए उपशय देते है। इसके अलावा मिनकॉफ कफ सिरप कासनाशक और कफनिस्सारक कार्य दर्शाता है।

पञ्चकासहरी स्वर्या कफविश्लेषणा परा।
श्वासकासौ निहन्ति तु प्रतिश्यायशोथज्वरान्।।

बालचातुर्भद्रिका सिरप और मिनकॉफ कफ सिरप परस्पर योगवाही रूपसे बालकों में व्याधिक्षमत्व की वृद्धि और संक्रमण का प्रतिकार कर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करते है।

- शिशुओं की रोग प्रतिकार शक्ति सशक्त करना।
- संक्रमण (Infection) का प्रतिबंध और निर्मूलन।
- लक्षणों की अवधि और गंभीरता में कमी।
- व्याधि का पुनरुद्भव का प्रतिबंध।
- जटिल अथवा नये संक्रमण का प्रतिबंध।
- Antibiotic, ज्वरघ्न औषधी उपयोग की आवश्यकता में कमी।
- आपत्कालीन विभाग के दौरे/अस्पताल में प्रवेश की आवृत्ती संख्या में कमी।
- स्कूल अथवा कार्यालयीन कार्य की हानि में कमी।

सोरियासिस (एककुष्ठ / किटिभ कुष्ठ) – में स्वायंभुव गुग्गुल की उपयुक्तता

सोरियासिस एक व्याधिक्षमत्व तंत्र जनित शोथ विकार है, जिसका प्रचलन विश्वभर में २ प्रतिशत और भारत में ०.४४ – २.८ प्रतिशत (१.२ प्रतिशत सर्व समावेशक) है। सोरियासिस सामान्यतः आयु के तीसरे अथवा चौथे दशक में होता हैं। सोरियासिस विशेषतः पुरुषों को महिलाओं के तुलना दो गुना प्रभावित करता हैं। (Indian journal of dermatology, venereology and leprology 76(6):595-601).सोरियासिस रुग्ण के जीवन की गुणवत्ता को कमकर उसको शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक रूपसे पीडित करता है।

सोरियासिस पर विश्व स्वास्थ्य संघठन द्वारा प्रकाशित नविनतम वैश्विक रिपोर्ट में सोरियासिस अनुसंधान में अनेक अपूर्ण रही चिकित्सा त्रुटियाँ (Unmet medical gaps) पाई गयी। इस रिपोर्ट में सोरियासिस संबंधित जटिलताएं, जैसे संप्राप्ति, हेतु, उपद्रव (complications and co-morbidities) जैसे संधिवात, जीर्ण त्वचारोग, श्वित्र, चयापचय संबंधित विकार और त्वक्–अस्थि–संधि संबंधी विकार (SAPHO Syndrome), उपचार और स्वास्थ्य संबंधित सेवाओं में सुधार करने के सुझाव दिए है। सोरियासिस एक विशिष्ट सार्वदेहिक व्याधि है, जिसकी स्वप्रतिरक्षा प्रणाली जनित (Autoimmune disorder) और शोथ जनक व्याधिओं के साथ अनुवंशिक और प्रतिरक्षात्मक समानता है।

यह बाहरी अथवा आंतरिक हेतुओं से उत्पन्न होकर स्वयंप्रेरित प्रतिरक्षा प्रणाली और शोथजनक परिणाम को दर्शाकर व्याधि लक्षण उत्पन्न करता हैं।

पिछले तीन दशकों के चिकित्सीय और प्रायोगिक अध्ययनों ने सोरियासिस संप्राप्ति में T cells तथा स्वयंप्रेरित प्रतिरक्षा प्रणाली और शोथजनक तंत्र को महत्त्वपूर्ण घटक दर्शाया है।

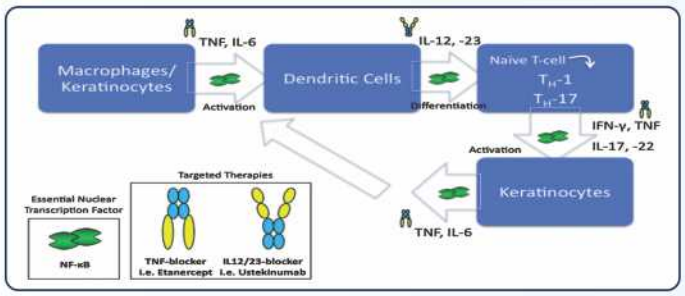

NF-kB: An essential transcription factor in psoriasis

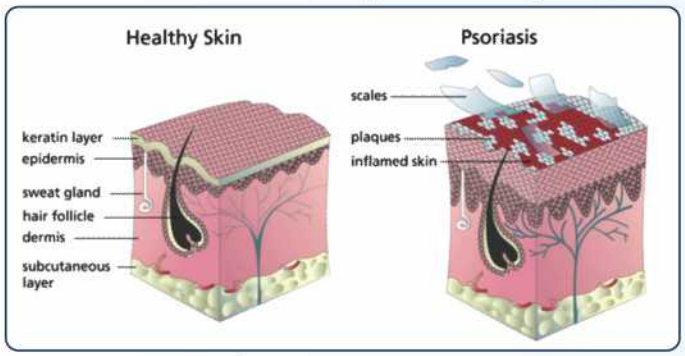

तनावपूर्ण आधुनिक जीवनशैली, पर्याप्त व्यायाम का अभाव तथा संबंधित चयापचय संबंधी विकारों से सोरियासिस का प्रचलन बढ रहा है। आयुर्वेद ग्रंथो में इस स्थिती का बहुत संक्षेप में वर्णन किया गया है। कुछ लोग एककुष्ठ को सोरियासिस और अन्य लोग किटिभ कुष्ठ को सोरियासिस मानते है। चरक संहिता में एककुष्ठ और किटिभ कुष्ठ का वर्णन इस प्रकार किया गया है:

अस्वेदनं महावास्तु यन्मत्स्यशकलोपमम्।
तदेककुष्ठं, चर्माख्यं बहलं हस्तिचर्मवत्।।
श्यावं किणखरस्पर्शं परुषं किटिभं स्मृतम्।। – चरक

आचार्य चरक ने एककुष्ठ और किटिभ कुष्ठ के संप्राप्ति का वर्णन इस प्रकार किया है।

वातादयस्त्रयो दुष्टास्त्वग्रक्तं मांसमम्बु च।
दुषयन्ति स कुष्ठानां सप्तको द्रव्यसंग्रहः।।
अतः कुष्ठानि जायन्ते सप्त चैकादशैव च।
न चैकदोषजं किञ्चित् कुष्ठं समुपलभ्यते।। – चरक

प्रकुपित त्रिदोष त्वक्, रक्त, मांस और अंबु धातु को दुष्ट करते है। सभी प्रकार के कुष्ठ मूलतः त्रिदोषज होते है। सोरियासिस कुष्ठ का एक प्रकार होने के कारण त्रिदोषज है। इसलिए सोरियासिस में त्रिदोष, त्वक्, रक्त, मांस और अंबु दुषित होते है।

स्वायंभुव गुग्गुल–बाकुची, करंज, गुडूची, निम्ब और हरिद्रा जैसे घटकद्रव्य युक्त एक प्रसिध्द गुग्गुल कल्प है, जो विभिन्न त्वक्विकार और कुष्ठ संप्राप्ति के मुख्य घटक रक्तधातु के दोष को दूर करते है। शिलाजतु, सुवर्णमाक्षिक, कुटज और नागरमोथा प्रभावी पित्तशामक हैं और रक्तधातु दुष्टी कम करते है। गोमूत्र विशेष शोधित गुग्गुल सहपान का कार्य कर कल्प की कार्यकारी शक्ति बढाता है।

...कुष्ठं नुदत्यसृग्वातमचिरेण।।
श्वित्राणि पाण्डुरोगं विषमानुदरप्रमेहगुल्मांश्च ।
नाशयति वलीपलितं योगः स्वायम्भुवो नाम्ना।।
– भा.प्र.म.खं. (कुष्ठरोग)

तथा, भावप्रकाश में बाकुची के गुणों का वर्णन कफ–रक्त–पित्त–कुष्ठ–कृमि – शोथ–नाशक के साथ–साथ केश्य और त्वच्य के रूप में किया गया है।

विष्म्भहृद्विमा रुच्या सराश्लेष्मास्रपित्तनुत्।
रूक्षा ह्रद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरकृमिप्रणुत्।।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु।
केश्यं त्वच्यं कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुनुत्।। – भा.प्र.

'European Journal of Pharmaceutical Sciences Volume 124, 1 November 2018' में प्रकाशित अध्ययन 'The active compounds derived from Psoralea corylifolia for photochemotherapy against psoriasis-like lesions: The relationship between structure and percutaneous absorption'. बाकुची (Psoralea corylifolia) के मुख्य घटक आयसोसोरालेन के कुष्ठनाशक प्रभाव को दर्शाता है।

स्वायंभुव गुग्गुल
श्वित्र में प्रभावी

उपयुक्तता:
श्वित्र एवं अन्य जीर्ण त्वचाविकार, स्रावी कुष्ठ, कण्डु, मुखदूषिका, एककुष्ठ, प्रमेह, पादव्रण, वातरक्त, मधुमेहजन्य क्षुद्रकुष्ठ, बालकों में उत्पन्न पामा

विशेष सावधानी :
उष्ण वीर्यात्मक बाकुची का अंतर्भाव होने के कारण पित्तप्रकृती एवं पित्तविकार के रुग्णोंने चिकित्सक की देखरेख से ही सेवन करें।

मात्रा एवं अनुपान :
२ से ४ गोलियाँ दिन में २ या ३ बार, महामंजिष्ठादि क्वाथ, खदिरारिष्ट, गोमुत्र, शहद या कोष्ण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400284
Swayambhuva Guggul

उपलब्धता : ६० गोली, १००० गोली

विविध पित्तसंबंधी विकारों में पित्तशेखर रस की उपयुक्तता।

'International Journal of Basic & Clinical Pharmacology, January 2017' में प्रकाशित अध्ययन 'Clinical profiling of patients with Acid Peptic Disorders (APD) in India: a cross-sectional survey of clinicians' के अनुसार अम्लपित्त और परिणामशूल जैसे पित्तज विकार (Acid Peptic Disorders) अत्यधिक रूपसे बढ रहे हैं और इन परस्पर व्यापक विकारों की चिकित्सा हेतु अधिक ध्यान देना जरुरी है। १८–५९ वर्ष आयु के लोकसमूह में उरोविदाह (Gastro Esophageal Reflux Disease GERD) और परिणामशूल (Peptic Ulcer Disease PUD) सामान्यतः पाए जाते है।

'Journal of Research in Medical Sciences, 2019' में प्रकाशित अध्ययन 'Migraine and gastric disorders: Are they associated?' के अनुसार एच. पाइलोरी संक्रमण (APD) और अर्धावभेदक (Migraine) के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध है। अर्धावभेदक संप्राप्ति के घटक सेरोटोनिन स्तर से संबंधित है। अर्धावभेदक को सेरोटोनिन कमी की जीर्ण अवस्था माना जाता हैं परंतु अर्धावभेदक के वेगकाल में मस्तिष्क स्थित सेरोटोनिन निर्माण बढ जाता है। एच. पाइलोरी प्लेटलेट ॲक्टिवेटींग फॅक्टर को उत्पन्न कर प्लेटलेट से सेरोटोनिन की मुक्ति बढाता है। कुछ अध्ययनों ने रुग्णों में अर्धावभेदक के वेगकाल समय सेरोटोनिन के बढे हूए स्तर दर्शाए है। (Arch Med Sci 2011)

६९.७ प्रतिशत एच. पाइलोरी संक्रमित रुग्णो में अर्धावभेदक लक्षण पाए गये अथवा एच. पाइलोरी उन्मूलन से अर्धावभेदक के लक्षणों से उपशय मिल सकता है। एक अन्य अध्ययन (a double-blind, controlled, clinical trial) के अनुसार अर्धावभेदक के चिकित्सा में एच. पाइलोरी उन्मूलन उपयुक्त है। (Pain Physician 2012)

आचार्य चरक ने केवल प्रकुपित पित्तदोष से उत्पन्न व्याधियों का वर्णन सूत्रस्थान अध्याय २० में पित्तज नानात्मज विकारों के अंतर्गत किया है। आचार्य चरक ने कुल ४० पित्तज नानात्मज विकारों का वर्णन किया हैः

पित्तविकारांश्चत्वारिंशतमत ऊर्ध्वमनुव्याख्यास्यामः

ओषश्च	**अतिस्वेदश्च (अङ्गस्वेदश्च)**	**रक्तविस्फोटश्च**	**पूतिमुखता च**
प्लोषश्च	**अङ्गगन्धश्च**	**रक्तपित्तं च**	**तृष्णाधिक्यं च**
दाहश्च	**अङ्गावदरणं च**	**रक्तमण्डलानि च**	**अतृप्तिश्च**
दवथुश्च	**शोणितक्लेदश्च**	**हरितत्वं च**	**आस्यविपाकश्च**
धूमकश्च	**मांसक्लेदश्च**	**हारिद्रत्वं च**	**गलपाकश्च**
अम्लकश्च	**त्वग्दाहश्च**	**नीलिका च**	**अक्षिपाकश्च**
विदाहश्च	**(मांसदाहश्च)**	**कक्षा (क्ष्या) च**	**गुदपाकश्च**
अन्तर्दाहश्च	**त्वगवदरणं च**	**कामला च**	**मेढ्रपाकश्च**
अंसदाहश्च	**चर्मदलनं च**	**तिक्तास्यता च**	**जीवादानं च**
ऊष्माधिक्यं च	**रक्तकोष्ठश्च**	**लोहितगन्धास्यता च**	**तमःप्रवेशश्च**
हरितहारिद्रनेत्र–मूत्रवर्चस्त्वं च;	**इति चत्वारिंशत्पित्तविकाराः पित्तविकाराणाम–परिसंख्येयानामाविष्कृततमा व्याख्याताः।।**		

इन व्याधियों के चिकित्सा हेतु आयुर्वेद में रोगावस्थानुसार–लंघन, स्नेहन, मृदुविरेचन, ग्राही, मधुर रसात्मक, पित्तशामक और विदग्ध नाशक उपचार की सलाह दी है ।

पित्तशेखर रस एक उत्तम रसौषधी है जो जीर्ण अम्लपित्त और परिणामशूल जैसे पित्तज विकारों के चिकित्सा हेतु संयोजित की गयी है। यह निम्नोक्त भेषज और रसौषधीयुक्त एक आदर्श पित्तजरोग निवारक औषधी है। अम्लपित्त, परिणामशूल से लेकर अर्धावभेदक और सामान्य पाए जानेवाले नानात्मज पित्तविकारों में भी पित्तशेखर का उपयोग लाभप्रद होता हैं।

छर्द्यम्लपित्तशूलघ्नो ग्रहण्यामयनाशनः ।
बहुनात्र किमुक्तेन पित्तरोगेषु शस्यते ।।

पित्तशेखर रस पित्तरोगों की चिकित्सा में मूर्धन्य माना जाता है।

सूतशेखर रस (सुवर्णयुक्त) प्रिमियम क्वालिटी	**भक्षयेदम्लपित्तघ्नो वान्तिशूलामयापहः।।** **... ग्रहण्यामयनाशनः।** **.... श्वासमन्दाग्निनाशनः।।** – यो.र.
बिल्व मज्जा	**श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत्।** **वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः।।** – भा.प्र.
आरग्वध मज्जा	**आरग्वधो गुरूः स्वादुः शीतलः स्रंसनोत्तमः।** **ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत्।।** **तत्फलं स्रंसनं रूच्यं कुष्ठपित्तकफापहम्।** **ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम्।।**– भा.प्र.
कालमेघ	**सुतिक्तः लघुरुक्षोष्णः कफपित्तविनाशनः।** **दीपनः स्वेदनो ज्ञेयः कृमिघ्नः पित्तसारकः।** **यकृद्रोगे क्रिमे कुष्ठे ज्वरं चासौ प्रशस्यते ।।** – भा.प्र.
शंख भस्म	**शङ्खःसुशीतलः क्षारस्त्वम्लपित्तविनाशनः।** **अग्निमान्द्यहरो बल्यो ग्राही ग्रहणिकाहरः।।** **परिणामोत्थशूलघ्नस्तारूण्यपिडिकापहः।** **विषदोषहरो वर्ण्यो मात्रा गुञ्जद्वजयोन्मिता।।** – र.त.
शौक्तिक भस्म	**शुक्तिका शूलशमनी हृदामयविनाशिनी।** **स्निग्धा रुच्या श्वासहरा दीपनी मधुरा मता।।** **.....नाशयत्याशु तथा च जठरामयान्।** – र.त.
कपर्दिक भस्म	**वराटी दीपनी चोष्णा नयनातङ्कहारिणी।** **कर्णस्रावहरात्यर्थं बह्निमान्द्यविनाशिनी।।** **पत्तिशूलादिशमनी ग्रहणीगजसिंहिका।** **क्षयस्फोटापहा वृष्या मात्रा रत्तिद्वयोन्मिता।।** – र.त.
अविपत्तिकर चूर्ण	**अम्लपित्तं निहन्त्याशु विबन्धं मलमूत्रयोः।** **अग्निमान्द्यभवान् रोगान् नाशयेदविकल्पतः।।**
भूम्यामलकी क्वाथ	**भूधात्री वातकृत्तिक्त कषाया मधुरा हिमा।** **पिपासाकासपित्तास्रकफकण्डूक्षतापहा।।**
भृंगराज स्वरस	**भृङ्गारः....कफवातनुत्। ....शोथामपाण्डुनुत्।** **.....रसायनो बल्यः कुष्ठनेत्रशिरोर्तिनुत्।।** – भा.प्र.

उपयुक्तता:
अम्लपित्त और संबंधित लक्षण
अग्निमांद्य, अजीर्ण, हृल्लास, शिरःशूल, अर्धावभेदक, छर्दि, ग्रहणी, परिणामशूल

सेवन विधि :
१ से २ गोलियाँ दिन में दो या तीन बार गोदुग्ध,आमला मुरब्बा, कोष्ण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902624
Pittashekhar Rasa

पित्तशेखर रस®
अम्लपित्त और परिणामशूल की उत्कृष्ट औषधी

उपलब्धता : ३० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
स्वास्थ्य सेवा विभाग
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई- ४०० ००४.
फोन : ९१-२२-६२३४ ६३०० फॅक्स :९१-२२-२३८८ १३०८
ई-मेल : healthcare@sdlindia.com
वेब साईट : www.sdlindia.com

केवल पंजीकृत चिकित्सक, अस्पताल या प्रयोगशालाओं के लिये
© All Copy Rights Reserved